फिरकी बच्चों की
Firkee Bachchon Ki
वर्ष 1 अंक 1 जून 2019
अर्द्धवार्षिक पत्रिका

हरा धान का खेत

हवा ने चल-चलकर घूमा
हरा धान का खेत
हर पौधे को गले लगाया
हर पत्ता चूमा।

—सुशील शुक्ल

चित्र— शोभा घारे
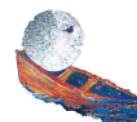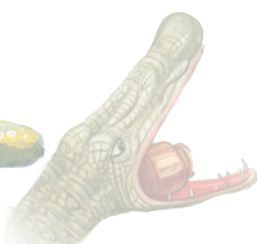
इस फिरकी में कहानी, कविता का पता

कहानी— साभार एकलव्य

चित्र— मयूख घोष

मीनू और मगर
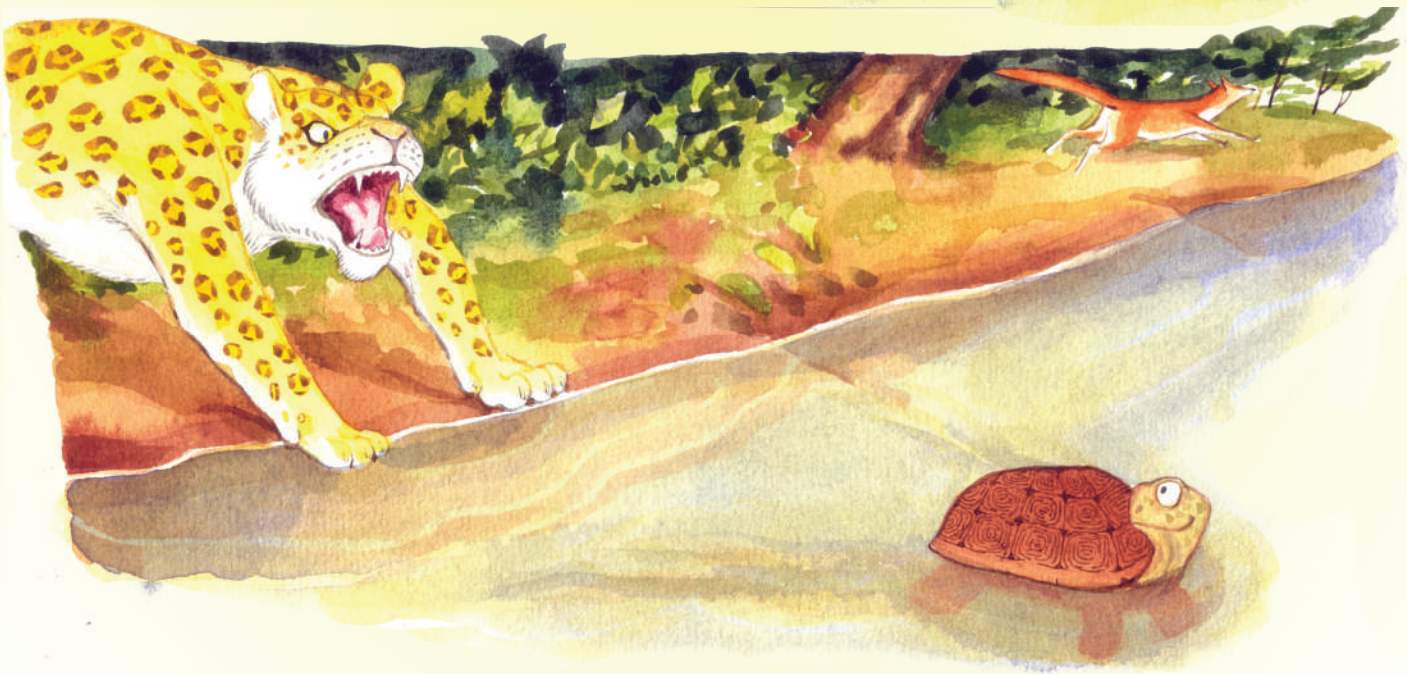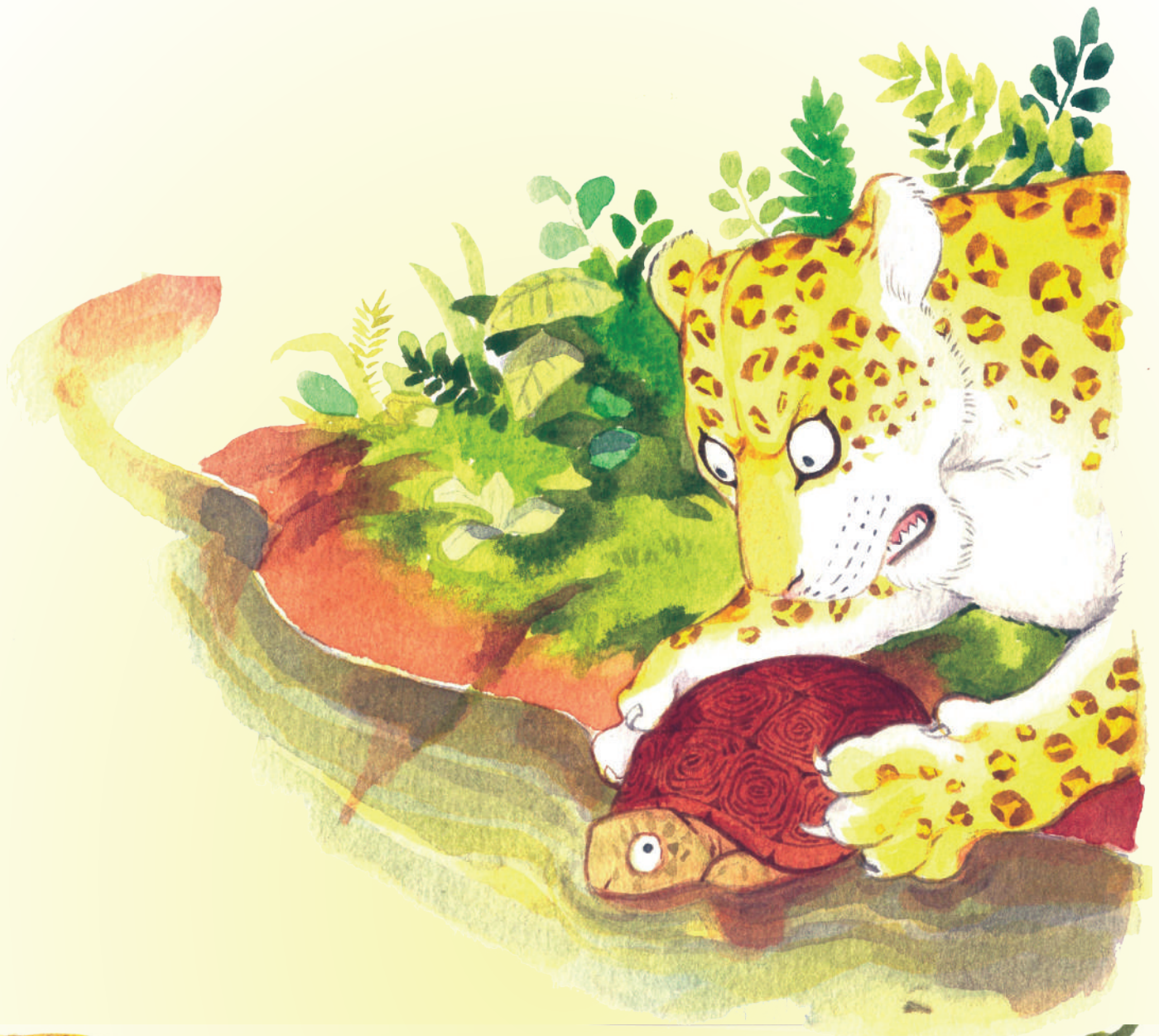
कहानी— साभार एकलव्य

चित्र— शुभम लखेरा

देखो, मैंने क्या बनाया !

चिराग
केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

ईशा
केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

साक्षी सिंह
केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
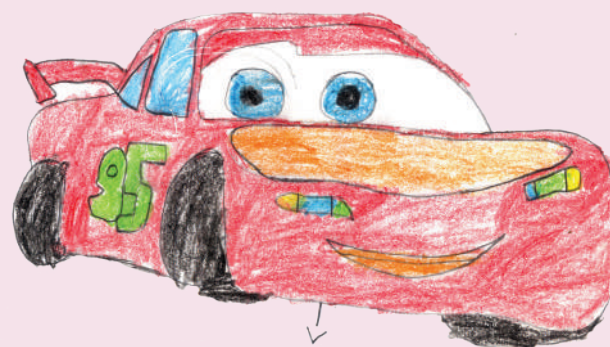
शशांक
केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

बीचों-बीच

चित्र— बंदना भौमिक

फिरकी में खोजो

The Moon

The Moon is round,
As round can be
Two eyes, a nose and
a mouth like me!

Illustration— Prashant Soni

सारा और चिड़िया

कहानी—राजीव तांबे
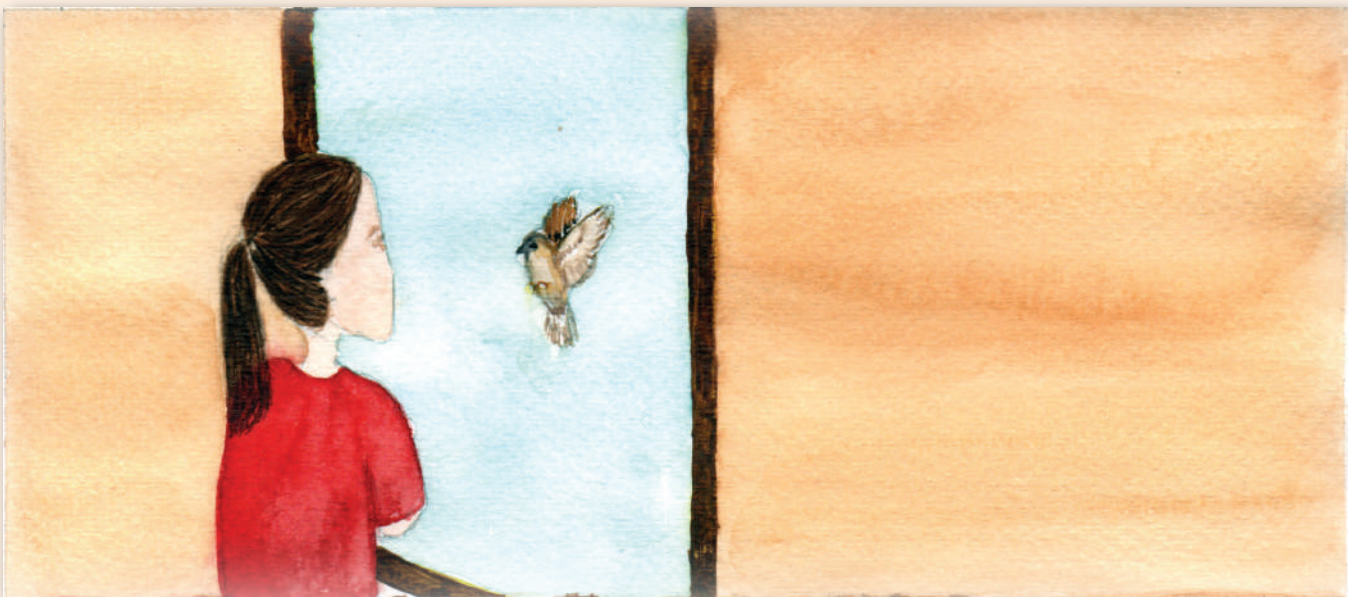
चित्र— हीरल खोना

दो मेंढक

दो मेंढक थे – छगन और मगन। दोनों को भूख लगी। मगन बोला– "चलो, झोंपड़ी में जाकर देखते हैं। क्या पता कुछ खाने को मिल जाए।" दोनों झोपड़ी में जा पहुँचे।

कहानी— उषा शर्मा

चित्र— चंद्रमोहन कुलकर्णी

"वह देखो मटका!"– छगन खुशी से चिल्लाया। मगन बोला– "क्या पता, क्या है उसके अंदर?" छगन ने कहा– "चलकर देखते हैं।" दोनों मटके पर जा चढ़े!
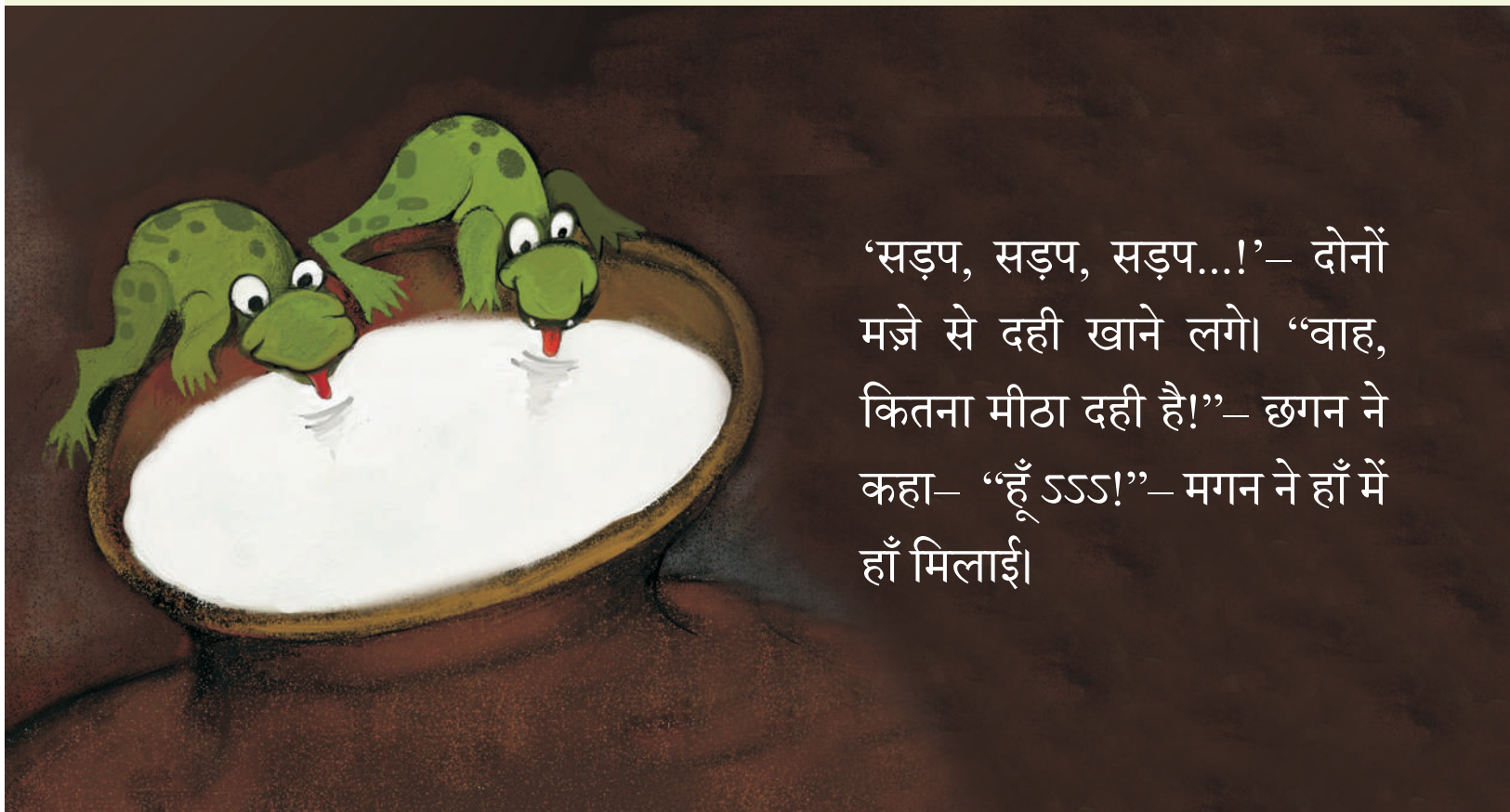
'सड़प, सड़प, सड़प...!'– दोनों मज़े से दही खाने लगे। "वाह, कितना मीठा दही है!"– छगन ने कहा– "हूँ ऽऽऽ!"– मगन ने हाँ में हाँ मिलाई।

अचानक मगन का पैर फिसल गया। गुड़ुप, गुड़ुप! मगन मटके में जा गिरा। छगन ज़ोर से बोला– "लो, मेरा हाथ पकड़ो।"

गुडुप! मगन को बचाने के चक्कर में छगन भी मटके में जा गिरा। "अरे तुम यहाँ क्यों कूद पड़े?"– मगन गुस्से से बोला।

छगन बोला– "तुम्हें बचाने के चक्कर में।" अब दोनों बाहर निकलने के लिए हाथ-पैर मारने लगे।

धीरे-धीरे दही छाछ में बदल गयी और छाछ के ऊपर मक्खन तैरने लगा। दोनों मक्खन के ऊपर बैठ गए।

मक्खन पर बैठ दोनों मटके से बाहर कूद पड़े। "मज़ा आया?"– दोनों एक साथ बोल पड़े। 'हा, हा, हा..., ही, ही, ही..., हू, हू, हू!' दोनों की हँसी सबने सुनी।

अंडे में एक अंडा है

साभार— एकलव्य

1. मछली 2. मीनार 3. मोर 4. मरीज़ 5. मशीन 6. महिला

इस चित्र को देखकर तुम और कौन-कौन से शब्द सोच पाते हो?

तुमने फिरकी के बीचों–बीच चित्र को देखा? इस चित्र के लिए कोई नाम बताओ।

सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं के लिए संपर्क करें

उषा शर्मा
शैक्षणिक संपादक
कक्ष संख्या 307, तीसरी मंज़िल, जी. बी. पंत ब्लॉक
एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली - 110016
दूरभाष- 011-26592293
ईमेल- earlyliteracy.ncert@gmail.com

PD 5T RPS

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की ओर से मो. सिराज अनवर, अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग डॉ. बी. आर. अंबेडकर खंड, एन.सी.ई.आर.टी. श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 के द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित तथा पुष्पक प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, बी-3/1, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फ़ेज़ II, नयी दिल्ली – 110 020 में मुद्रित, संपादक– उषा शर्मा।

FBK2019JUN

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016

₹ 25.00

चाँद चला है नाव चलाने

चाँद चला है नाव चलाने,
देखा कुहासे के नद को,
रोक सका न अपने मन को,
कई सितारे भी आ धमके,
बोले– चलना थोड़ा थम के,
रात को दो कुछ और थिराने,
चाँद चला है नाव चलाने।

—मनोज कुमार झा

चित्र— शोभा घारे